Sanskrit (Subsidiary)
UPN
B.A. (1st Part)

डॉ. [illegible]
असिस्टेंट प्रोफेसर
आर.डी.एफ. कॉलेज
मेरठ, [illegible]

संस्कृत साहित्य का इतिहास

पूर्व में बताया गया है कि महर्षि वाल्मीकि को आदिकवि इसलिए कहा जाता है कि उनसे पहले किसी ने भी किसी छन्द में एक व्यवस्थित रूप से कोई काव्य नहीं लिखा था। वह क्रौंच पक्षी के जोड़े में से नर पक्षी के साथ क्रौंची पक्षी का [illegible] वध देखकर महर्षि का हृदय करुणा से भर गया एवं उनके मुख से यह प्रथम काव्य अनायास ही निकल गया -

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्॥

उनके शोक श्लोक के रूप में निर्मित होने की परिकल्पना के कारण साहित्य में इसे एक महान घटना मानी जाती है तभी तो कहा जाता है - 'शोकः श्लोकत्वमागतः' अर्थात् शोक ही श्लोक के रूप में निर्मित हुआ। यह घटना भावनात्मक काव्य की रचना के रूप में प्रारम्भ का संकेत था।

महर्षि वाल्मीकि के पहले ऐसी किसी काव्य की रचना का [illegible]

पाते हैं जिनमें अनुप्रासता या एकरूपता हो। किसी काव्यत्व के लिए उसमें अर्थगतात्मकता ही नहीं अपितु उसकी एकरूपता आवश्यक होती है। अलंकार, छन्द, गुण, रीति, रस आदि सभी किसी काव्यात्मक आवश्यक काव्यात्मकता प्रदान करते हैं।

अपने कुल के अकेले ही ~~काव्यमयी~~ वाणी है इसी महर्षि भी चकित हो उठे थे, क्योंकि उनका यह काव्य विना उनके विरोध प्रमाण के हो गया था। उनका यह वाक्य लौकिक अनुष्टुप छन्द में था। अब तक छन्दोमयी वाणी वेद में ही प्रयुक्त होता था। अपनी छन्दोमयता के साथ ही वेदों को 'छन्दांसि' कहा जाता है। सामान्य प्रचलन में उस काल में गद्यमय वाक्य ही चलते थे। यही सोच कर के उस बात की जगह (क्रौ) इचगाएँ गया में ही थी।

Rukmini Rana